हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश

“चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 23 नवम्बर, 2021 को ग्राम पंचायत कल्पा, रोघी एवं दूनी जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित **“कल्पा एवं पूह वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता”** परियोजना के तहत **“चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता”** विषय पर एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन वन परिक्षेत्र कार्यालय कल्पा के परिसर में किया गया । जिसमें ग्राम पंचायत कल्पा, दूनी एवं रोघी के 50 किसानों एवं कल्पा वन खंड के फ्रंट लाइन फील्ड स्टाफ ने भाग लिया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान श्री विजय नेगी (मुख्य अतिथि), डॉ पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), श्री मन मोहन सिंह (वन परिक्षेत्र अधिकारी), श्री मोहन सिंह (खंड अधिकारी), श्री शांता कुमार (वन रक्षक) एवं पंचायत प्रधान श्रीमती सरिता (कल्पा), रतन मंजरी (रोघी) एवं दीवान सिंह (दूनी) भी उपस्थित रहे ।

डॉ स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), डॉ पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों, पंचायत प्रधानों एवं सभी प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में पधारने पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया । उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेशों में वानिकी के क्षेत्र मे शोध कार्य कर रहा है। साथ ही साथ उन्होंने संस्थान में होने वाले शोध कार्यों एवं वर्तमान गतिविधियों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया । अपने संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने यह भी कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक

रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है जिससे न केवल वृक्षों को अत्याधिक क्षति पहुँच रही है अपितु प्राकृतिक पुनर्जनन के साथ-2 पैदावार में भी कमी हो रही है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जायेँगे और लोग इससे होने वाले सभी प्रकार के लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जायेँगे । इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्याधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवायेँ भी प्राप्त होती रहेंगी ।

मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), किन्नौर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है और कहीं न कहीं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है । इस कड़ी में बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना “चिलगोजा” के अंतर्गत आज इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है तथा भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा । उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की इस पहल कि सराहना की और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला से आग्रह किया कि वे किन्नौर की अन्य विलुप्त होती प्रजातियों जंगली चूली, बेमी एवं औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए भी इस तरह के जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करें । उन्होंने नाबार्ड बैंक की तरफ से वितीय सहयोग का आश्वासन भी दिया । उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे । उन्होंने लोगों के आग्रह पर नाबार्ड के विभिन्न योजनाओं

के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी । इसके अतिरिक्त उन्होंने लोगों के अनुरोध पर चिलगोजा के भंडारण के लिए भंडार गृह स्थापित करने के लिए वितीय वित्तीय सहयोग का भी आश्वासन दिया ।

इसके उपरांत तकनीकी सत्र के दौरान डॉ स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा को 'चट्टानी पर्वत के विजेता' के नाम से भी जाना जाता है । यह किन्नौर जैसे नाज़ुक क्षेत्र की ढीली एवं नाज़ुक मिट्टी के कटाव को रोकने की अत्याधिक क्षमता रखता है । चिलगोजा प्रजाति के नष्ट होने से लोगों को आर्थिक नुकसान होगा अपितु यहाँ के लोगों को सामाजिक एवं पर्यावरणीय नुकसान भी होगा। उन्होंने 'चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता' एवं 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे में लोगों को विस्तृत जानकारी दी तथा प्रतिभागियों से कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें । साथ ही साथ उन्होंने पंचायत प्रधानों एवं लोगों से अनुरोध भी किया कि वे आगामी चिलगोजा ओकशन के लिए होने वाले ग्राम सभा की बैठक में सभी ग्राम वासियों को चिलगोजा की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे में बताएँगे तथा साथ ही साथ ठेकेदारों को सतत कटाई एवं 5-10 शंकुओं को वृक्षों पर छोड़ने के निर्देश दें ताकि चिलगोजा के वृक्षों को कम क्षति पहुंचे एवं प्राकृतिक पुनर्जनन बढ़ सकें ।

डॉ. पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'कीटों और रोगाणुओं से चिलगोजा का बचाव' विषय पर जानकारी देते हुए कहा कि कीटों की बहुत सारी प्रजातियां मुख्यतः *Dioryctria abietella* एवं *Plodia interpunctella* चिलगोजा के शंकुओं एवं बीजों को अत्याधिक नुकसान पहुंचाती है तथा इनके नुकसान से चिलगोजा को बचाने के लिए इनके संक्रमित छाल, शाखाओं एवं शंकुओं को काट कर जला देना चाहिए ताकि यह इन्हें और नुकसान न पहुंचा पायें । उन्होने लोगों को अवगत करवाया कि चिलगोजा के कीटों और रोगाणुओं के प्रबंधन के लिए संस्थान ने प्रभावी नियंत्रण उपाय विकसित कर लिया है जो कीटों और रोगाणुओं के प्रबंधन में कारगर हैं । लाइट एवं फ़ीरोमोन्स ट्रेप शंकुओं में लगने वाले कीटों एवं जैव कीटनाशक जैसे कि नीम बीजों में लगने वाले कीटों के प्रबंधन में प्रभावी हैं।

श्री मन मोहन सिंह (वन परिक्षेत्र अधिकारी), ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को "चिलगोजा के नर्सरी तकनीक एवं रोपण" एवं 'चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवत्ता के पौधों के चयन की आवश्यकता' के बारे में विस्तृत जानकारी दी । उन्होंने लोगो को बताया की चिलगोजा किन्नौर के लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है तथा वर्तमान में बहुत से मानवजनित खतरों के कारण यह भविष्य में विलुप्त हो सकता है । इसलिए वन विभाग एवं स्थानीय लोगों साथ में मिलकर चिलगोजा का पौध रोपण करना होगा ताकि चिलगोजा के नये जंगल तैयार हो पायें । उन्होने यह भी आग्रह किया कि यदि वनों में अच्छी गुणवत्ता वाले वृक्ष दिखें तो उसकी जानकारी वे वन विभाग के अधिकारियों को अवश्य दें ताकि वे उसी गुणवता वाले पौधों की नर्सरी तैयार कर सकें । जिससे न केवल चिलगोजा के बीजों की पैदावार बढ़ेगी अपितु किसानों को बीजों के व्यापार में भी अधिक मुनाफा होगा । इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएँ भी उनके समक्ष रखी एवं उन्होंने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

श्री मोहन सिंह (खंड अधिकारी) ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । उन्होने स्थानीय बोली में ***'शी मा ली री ग्यामिगसा शांग माँ ली री ग्यामिगसा'*** अर्थात चिलगोजा जन्म, मरण, शादी-ब्याह, त्योहारों इत्यादि के लिए अति आवश्यक है । इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में चिलगोजा की भारी कमी के कारण शादी-ब्याह में चिलगोजा की मालाओं के स्थान पर खातग पहनाया जा रहा है जोकि चिलगोजा की पैदावार की लगातार गिरावट एवं हमारे पारंपरिक संस्कृति के विलुप्त होने का संकेत है । साथ ही साथ उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे शवों को जलाने के लिए चिलगोजा की लकड़ी न काटें।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए पंचायत प्रधान श्रीमती सरिता (कल्पा), श्रीमती रतन मंजरी (रोघी) एवं दीवान सिंह (दूनी) ने संस्थान के प्रयास की सराहना की और कहा चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए जो पहल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने की है उससे उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि चिलगोजा के संरक्षण के लिए वे आगामी चिलगोजा ओकशन के लिए होने वाले ग्राम सभा की बैठक में सभी ग्राम वासियों को चिलगोजा की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे बताएँगे तथा साथ ही साथ ठेकेदारों को सतत कटाई एवं 5-10 शंकुओं को वृक्षों पर छोड़ने के निर्देश देंगे ताकी प्राकृतिक पुनर्जनन बढ़े । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

अजय कुमार, कनिष्ठ परियोजना अध्येता एवं कुमारी ईशानी, परियोजना सहायक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को तोड़ने की विधि' के बारे में फील्ड डेमोन्सट्रेशन के माध्यम से बताया । इसी दौरान पाँच मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर भी पंचायतों को प्रदान किये गये ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों तथा किसानों- बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया I उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

चिलगोजा के संरक्षण और
स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता
पर
एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम
23 नवम्बर, 2021
ग्राम पंचायत कल्पा, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश
आयोजक: हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
NABARD
airtel

चिलगोजा के संरक्षण और
पर
NABARD
airtel

मीडिया कवरेज

चिलगोजा के संरक्षण की आवश्यकता

जागरूकता प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों को किया जागरूक

सिटी रिपोर्टर। शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा चिलगोजा के वनों के संरक्षण के लिए चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता है। इस विषय पर एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जोकि 23 से 26 नवंबर की समयावधि के मध्य कल्पा वन परिक्षेत्र, किन्नौर के कल्पा, पंगी, शौंगठड एवं उरनी में किया गया।

कल्पा, पंगी व उरनी में किया प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित पोषित परियोजना के अंतर्गत किया गया। जिला विकास प्रबंधन नाबार्ड विजय नेगी ने मुख्य अतिथि के तौर पर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान कल्पा, रोघी, दूनी, पंगी, बारंग, पवारी, तांगलिंग, मीरु एवं उरनी गांव के लगभग 200 किसान व बागवानों ने भाग लिया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों डॉ. स्वर्ण लता, डॉ. पवन राणा एवं कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों द्वारा विभिन्न विषयों मुख्यतः वितरण एवं आवास, प्राकृतिक एवं कृत्रिम पुनर्जनन, चिलगोजा शंकुओं के तुड़ान के दौरान शाखाओं की विनाशकारी कटाई के दुष्प्रभावों, कीटों एवं रोगाणुओं द्वारा क्षति, उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने की आवश्यकता एवं संरक्षण के लिए सामुदायिक योगदान की आवश्यकता पर विस्तृत जानकारी दी।

अवैज्ञानिक तरीके से हो रहे दोहन के कारण वृक्षों को हो रही अत्याधिक क्षति: स्वर्ण लता

इस अवसर पर डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा किन्नौर जिले का पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष है। वर्तमान में इस प्रजाति के अवैज्ञानिक तरीके से दोहन के कारण इसके वृक्षों को अत्याधिक क्षति हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप इसके प्राकृतिक पुनर्जनन एवं पैदावार में भी अत्यधिक कमी पायी गयी है। यह प्रजाति भविष्य में विलुप्त भी हो सकती है। इसलिए इस प्रजाति के बेहतर संरक्षण के लिए चिलगोजा पर शोध कार्य एवं पौधरोपण के साथ-साथ इनके वनों की उचित प्रबंधन की भी आवश्यकता है जोकि सामुदायिक भागीदारी के बिना संभव नहीं है। इसलिए किन्नौर के हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण के लिए स्वेच्छा से आगे आएं व अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। इस दौरान इन्होंने ग्रामीणों एवं किसानों के समक्ष चिलगोजा के शंकुओं को वैज्ञानिक तरीके से निकालने की तकनीक का भी प्रदर्शन करवाया।

दैनिक भास्कर हिमाचल 27-11-2021

किसानों को किया चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूक

शिमला| हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा चिलगोजा के वनों के संरक्षण के लिए चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता, विषय पर एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। यह शिविर 23 से 26 नवंबर तक किन्नौर के कल्पा, पंगी, शौंगठड एवं उरनी में किया गया। जिला विकास प्रबंधन नाबार्ड विजय नेगी ने मुख्यातिथि के तौर पर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रशिक्षण के दौरान कल्पा, रोघी, दूनी, पंगी, बारंग, पवारी, तांगलिंग, मीरु एवं उरनी गांव के लगभग 200 किसान व बागवानों ने भाग लिया। एचएफआरआई के वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता, डॉ. पवन राणा एवं कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों द्वारा विभिन्न विषयों मुख्यतः वितरण एवं आवास, प्राकृतिक एवं कृत्रिम पुनर्जनन, चिलगोजा शंकुओं के तुड़ान के दौरान शाखाओं की विनाशकारी कटाई के दुष्प्रभावों, कीटों एवं रोगाणुओं द्वारा क्षति, उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने की आवश्यकता एवं संरक्षण के लिए सामुदायिक योगदान की आवश्यकता पर विस्तृत जानकारी दी। डॉ. स्वर्ण लता ने कहा की चिलगोजा किन्नौर जिले का पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष है और वर्तमान में इस प्रजाति के अवैज्ञानिक तरीके से दोहन के कारण इसके वृक्षों को अत्यधिक क्षति हो रही है।

चिलगोजा संरक्षण पर दिया प्रशिक्षण

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से चिलगोजा के वनों के संरक्षण के लिए चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता विषय पर 23 से 26 नवंबर के बीच कल्पा वन परिक्षेत्र, किन्नौर के कल्पा, पंगी, शौंगठ, एवं उरनी में एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इनका आयोजन राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की ओर से वित्त पोषित परियोजना के तहत किया गया। जिला विकास प्रबंधन नाबार्ड विजय नेगी ने मुख्य अतिथि के तौर पर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान कल्पा, रोघी, दूनी, पंगी, बारंग, पवारी, तांगलिंग, मीरु और उरनी गांवों के दो सौ किसानों और बागवानों ने भाग लिया। इस दौरान ग्रामीणों एवं किसानों के समक्ष चिलगोजा के शंकुओं को वैज्ञानिक तरीके से निकालने की तकनीक का भी प्रदर्शन करवाया। ब्यूरो

चिलगोजा के वनों के संरक्षण के लिए आयोजित कार्यशाला में मौजूद बागवान और किसान। -संवाद

अवैज्ञानिक दोहन से चिलगोजा पर मंडराया खतरा : डॉ. स्वर्ण लता

संवाद न्यूज एजेंसी

सांगला (किन्नौर)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने चिलगोजा के वनों के संरक्षण के लिए और स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता विषय पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इसका आयोजन 23 नवंबर से 26 नवंबर के बीच कल्पा वन परिक्षेत्र किन्नौर के कल्पा, पांगी, शौगठड़ और उरनी में किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक की वित्त पोषित परियोजना के अंतर्गत किया गया। जिला विकास प्रबंधन नाबार्ड विजय नेगी ने बतौर मुख्यातिथि कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान कल्पा, रोघी, दूनी, पांगी, बारंग, पोवारी, तांगलिंग, मीरु और उरनी गांव के करीब 200 किसान-बागवानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों डॉ. स्वर्ण लता, डॉ. पवन राणा और कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों ने विभिन्न विषयों वितरण, आवास प्राकृतिक और कृत्रिम पुनर्जनन, चिलगोजा शंकुओं के तुड़ान के दौरान शाखाओं की विनाशकारी कटाई के दुष्प्रभावों, कीटों और रोगाणुओं के क्षति, उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने की आवश्यकता और संरक्षण के लिए सामुदायिक योगदान की आवश्यकता पर जानकारी दी। डॉ. स्वर्ण लता ने बताया की चिलगोजा किन्नौर जिले का पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष है। वर्तमान में प्रजाति के अवैज्ञानिक तरीके से दोहन के कारण वृक्षों को क्षति हो रही है। इसके परिणामस्वरूप इसके प्राकृतिक पुनर्जनन और पैदावार में भी कमी पाई गई है। इस दौरान उन्होंने कहा की यह प्रजाति भविष्य में विलुप्त भी हो सकती है, इसलिए इसके बेहतर संरक्षण के लिए चिलगोजा पर शोध कार्य और पौधरोपण के साथ-साथ वनों की संरक्षण के लिए आगे आएं और भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने ग्रामीणों कोचिलगोजा के शंकुओं को वैज्ञानिक तरीके से निकालने की तकनीक भी बताई।

किन्नौर में चिलगोजा के संरक्षण को लेकर लोगों को किया जागरूक